08-08-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

“मीठे बच्चे - शान्त रहने का स्वभाव बहुत अच्छा है, शान्त स्वभाव वाले बहुत मीठे लगते हैं, फालतू बोलने से न बोलना अच्छा है"

Refer last page for "अव्यक्त वाणी" (Avyakt Vani)

प्रश्नः- किन बच्चों को सभी प्यार करते हैं? स्वयं को सेफ रखने का साधन क्या है?

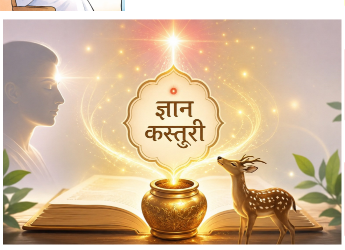

उत्तर:- जो सभी की बहुत रूचि से, प्यार से सेवा करते हैं, उनको सभी प्यार करते हैं। तुम्हें कभी भी सेवा का अहंकार नहीं आना चाहिए। बाप द्वारा जो ज्ञान की कस्तूरी मिली है, वह दूसरों को देनी है, सबको शिवबाबा की याद दिलानी है। इस याद की यात्रा से ही Feel the Force तुम बहुत-बहुत सेफ रहेंगे। जितना याद में रहेंगे उतना खुशी भी रहेगी और मैनर्स भी सुधरते जायेंगे।

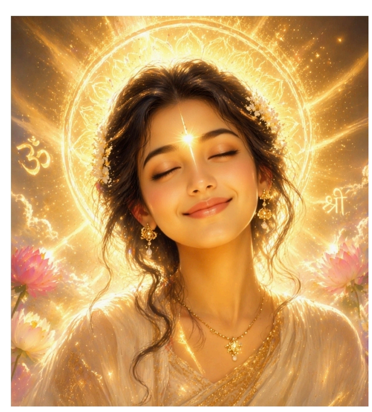

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

08-08-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

Thank you so much मेरे मीठे बाबा...

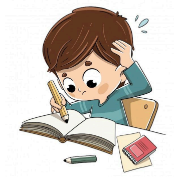

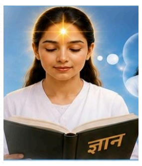

Exclusive Authority of Shiv baba

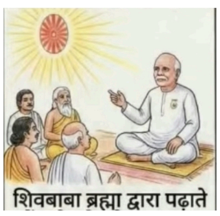

चढ़ाओ नशा...

मैं कौन, मेरा कौन...!

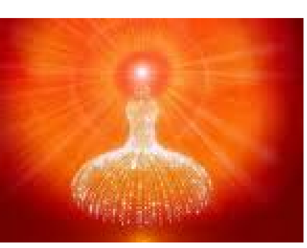

ओम् शान्ति। रूहानी बाप बैठ रूहानी बच्चों को समझाते हैं, समझा-समझाकर कितना समझदार बना देते हैं। पढ़ाई भी सहज है ना। वह है स्थूल पढ़ाई और यह है सूक्ष्म पढ़ाई। तुम बच्चे जानते हो यह पढ़ाई बाप के सिवाए और कोई पढ़ा नहीं सकते हैं। बाप आये ही है पवित्र बनाने और पढ़ाने। एम-ऑब्जेक्ट सामने खड़ी है, तो ऐसे बाप को याद कर खुशी में रोमांच खड़े हो जाने चाहिए। यह भी बच्चे जानते हैं कि दिन-प्रतिदिन हमको शान्ति में ही जाना है। शान्ति तो सबको बहुत पसन्द होती है। बड़े आदमी जास्ती नहीं बोलते हैं और न जोर से बोलते हैं। तुम बहुत-बहुत बड़े आदमी बनते हो वास्तव में आदमी नहीं कहेंगे, तुम तो देवता बनते हो। देवताओं का बोलना बहुत थोड़ा होता है। तुमको भी जब देवता बनना है तो टॉकी से बदल साइलेन्स में रहने का अभ्यास करो। शान्ति में रहने वाले के लिए समझेंगे कि इनका अपने ऊपर अटेन्शन है जबकि तुमको शान्तिधाम जाना है तो बोलना भी बहुत आहिस्ते (धीरे) है। आहिस्ते बोलते-बोलते शान्तिधाम में चले जाना है।

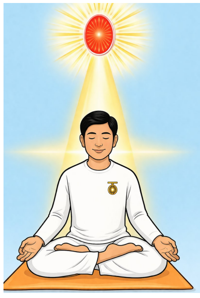

जितना तुम शान्ति में रहते हो उतना शान्ति फैलाते हो। तुमको बहुत शान्ति में रहना चाहिए। आवाज से बात करना अच्छा नहीं लगता। क्रोध भी अच्छा नहीं है। बच्चों में कोई भी विकार नहीं रहने चाहिए। देखना है - हम कोई से लड़ते-झगड़ते तो नहीं हैं! बाप ने समझाया है हियर नो ईविल, टॉक नो ईविल... जो बाते तुमको पसन्द नहीं हैं, उन बुरी बातों से तुम्हें किनारा कर देना चाहिए तो दोनों का मुख बन्द रहेगा। हर बात में दैवी गुणों को धारण करना है। कोई आवाज से बात करे तो बोलो शान्त, आवाज मत करो। तुम जानते हो हम शान्ति स्थापन करते हैं। सतयुग में शान्ति रहती है ना। मूलवतन में तो है ही शान्ति। शरीर ही नहीं तो बोलेंगे फिर कैसे। बाप बच्चों को श्रीमत तो बहुत अच्छी देते हैं, समझाते हैं मीठे बच्चों अब तुम्हें अपने घर चलना है, टॉकी से मूवी में आना है फिर साइलेन्स में चले जायेंगे। जो भी मिले उनको यही पैगाम देना है। तुम जितना साइलेन्स में रहेंगे उतना समझेंगे यह लोग किसी धुन में हैं। शान्त रहने का स्वभाव बहुत अच्छा है। वह बहुत मीठे लगते हैं।

One hand cant claps, it takes two hands to clap.

08-08-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

फालतू बोलने से न बोलना अच्छा है।

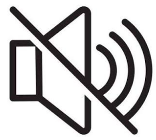

Great स्वमान

तुम सच्चे-सच्चे पैगम्बर हो। तुम्हारी सबके ऊपर मेहर (कृपा) होनी चाहिए। मेहर करने वाले बच्चे बड़े शान्त में बाप की याद में रहेंगे। सिर्फ पैगाम देना है कि बेहद के बाप को याद करो तो बेहद का सुख-शान्ति मिलेगा। लौकिक बाप के पास बहुत धन है तो बहुत वर्सा मिलेगा ना। बेहद के बाप पास तो है विश्व की बादशाही, जो हर 5000 वर्ष बाद तुम्हें विश्व की बादशाही मिलती है।

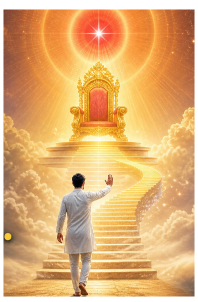

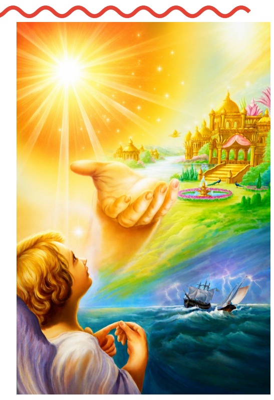

तुम बच्चों को सभी की बहुत रूचि से सर्विस करनी है। हरेक को सेवा के लायक बनना है। जो दूसरों की प्यार से सेवा करते हैं उनको सभी प्यार करते हैं। कभी भी सेवा का अहंकार नहीं आना चाहिए। तुम्हें बाप द्वारा ज्ञान की कस्तूरी मिली है, वह दूसरों को देनी है। एक दो को याद दिलाते रहो

कि शिवबाबा याद है? इसमें खुशी भी होती है। याद दिलाने वाले को थैंक्स देना चाहिए। याद की यात्रा से तुम बच्चे बहुत-बहुत सेफ रहेंगे। जितना याद में रहेंगे उतना खुशी भी रहेगी और मैनर्स भी सुधरते जायेंगे। तुम्हें अपने कैरेक्टर्स जरूर-जरूर सुधारने हैं। हरेक अपनी दिल से पूछे हमारा स्वभाव बहुत-बहुत मीठा है? कभी किसी को नाराज़ तो नहीं करते। ऐसा वातावरण कभी न हो जो कोई नाराज़ हो जाए। ऐसी कोशिश करनी है क्योंकि तुम बच्चे बहुत ऊंच सर्विस पर हो। तुम्हें इस सारे माण्डवे को रोशनी देनी है। तुम धरती के चैतन्य सितारे हो। कहा भी जाता है नक्षत्र देवता... अब वह सितारे कोई देवता नहीं हैं, तुम तो उनसे महान बलवान हो क्योंकि तुम सारे विश्व को रोशन करते हो, तुम ही देवता बनने वाले हो। जैसे ऊपर सितारों की रिमझिम है, कोई सितारा बहुत तीखा होता है और कोई हल्का। कोई चन्द्रमा के नज़दीक होता है। तुम बच्चे भी योगबल से सम्पूर्ण पवित्र बनते हो तो चमकते हो।

Feel the Force

Feel the Force

ये सदैव याद रहे...

Swamaan

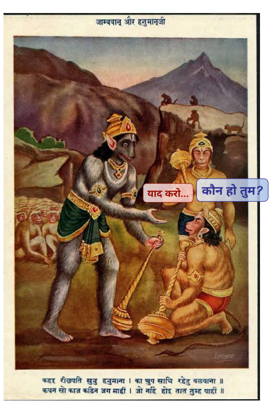

08-08-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा"

कापारी खुशी

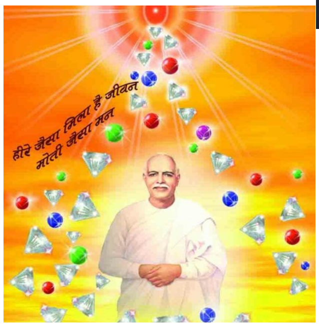

चढ़ाओ नशा...

सदा जीते रहो

अभी तुम बच्चों को अविनाशी ज्ञान रत्नों की लॉटरी मिल रही है तो कितनी खुशी रहनी चाहिए। अन्दर में खुशी की उछलें मारते रहो। यह तुम्हारा जन्म हीरे जैसा गाया जाता है। तुम ब्राह्मण ही नॉलेजफुल बनते हो तो तुमको नॉलेज की ही खुशी रहती है। इन देवताओं से भी तुम श्रेष्ठ हो। तो तुम्हारा चेहरा सदा खुशी से खिला रहे। बाप बच्चों को आशीर्वाद करते हैं मीठे बच्चे सदा शान्त भव! चिरन्जीवी भव! अर्थात् बहुत जन्म जियो। आशीर्वाद तो बाप से मिलती है फिर भी हरेक को अपना पुरुषार्थ करना है कि हम चिरन्जीवी कैसे बनें। बाप को याद करने से तुम चिरन्जीव बन रहे हो। यह आशीर्वाद बाप देते हैं। ब्राह्मण लोग भी कहते हैं आयुश्वान भव। बाप भी कहते हैं बच्चे सदा जीते रहो। तुम्हें आधाकल्प के लिए काल नहीं खायेगा। सतयुग में मरने का नाम नहीं होता। यहाँ तो मनुष्य मरने से डरते हैं ना। तुम तो पुरुषार्थ कर रहे हो मरने लिए। तुम जानते हो बाबा को याद करते-करते हम यह शरीर छोड़ अपने शिवबाबा के

08-08-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "ब

पास जायेंगे, फिर स्वर्गवासी बनेंगे।

अभी तुम मोस्ट बील्वेड बाप के बच्चे बने हो तो तुमको भी बाप जैसा बहुत-बहुत मीठा बहुत प्यारा बनना है। बाबा पत्रों में भी लिखते हैं मीठे-मीठे लाडले सिकीलधे बच्चों... बाबा बहुत मीठा है ना। प्रैक्टिकल में अनुभव करते हो कि बाबा कितना मीठा, कितना प्यारा है। हमें भी ऐसा बनाते हैं। यह भी तुम जानते हो कि हम कितने मीठे, कितने प्यारे थे। हम ही पूज्य से फिर पुजारी बनें तो खुद को पूजते रहे। यह भी बड़ी वन्डरफुल समझने की बातें हैं।

तुम बच्चे जानते हैं आधाकल्प के हमारे सब दु:ख दूर करने वाला बाबा अभी आया हुआ है। कहते हैं हर-हर महादेव। अब वह महादेव तो नहीं है। दु:ख

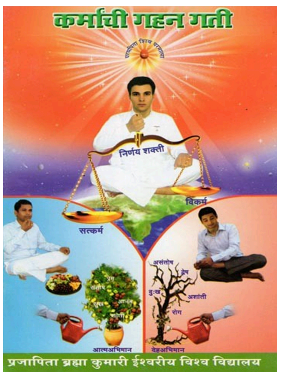

तो बाप ही हरेंगे। दु:ख हरकर सुख देने वाला बाप है। आधाकल्प तुमने बहुत दु:ख देखे हैं। 5 विकारों की बीमारी बहुत बढ़ गई है, इस बीमारी ने बहुत दु:खी किया है, इसलिए बाप कहते हैं मीठे बच्चे, यह जो कर्मों का खाता है, उनको अब ठीक करो। व्यापारी लोग भी 12 मास का खाता रखते हैं ना।

बाप समझाते हैं बच्चे, अभी सारी सृष्टि पर देखो कितना किचड़ा है, यह है ही नर्क, तो बाप को आना पड़ता है नर्क को स्वर्ग बनाने। बाबा बहुत उकीर (प्रेम) से आते हैं, जानते हैं मुझे बच्चों की सेवा में आना है। मैं कल्प-कल्प तुम बच्चों की सेवा पर उपस्थित होता हूँ।

How humble my baba is...!

जब खुद आते हैं तब बच्चे समझते हैं बाप हमारी सेवा में उपस्थित हुए हैं। यहाँ बैठे सभी की सेवा हो जाती है। सारी सृष्टि का कल्याणकारी दाता तो एक ही है ना। बाप जानते हैं सारी दुनिया की जो भी आत्मायें हैं सबको मैं ही वर्सा देने आता हूँ। बेहद के बाप की

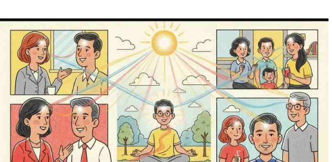
One and only one Shivbaba

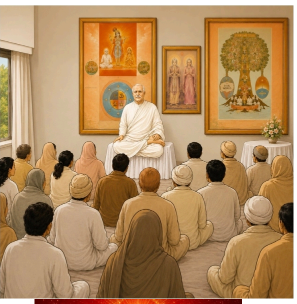

समझा?

08-08-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

नज़र दुनिया की आत्माओं तरफ जाती है। भल यहाँ बैठे हैं परन्तु नज़र सारे विश्व पर और सारे विश्व के मनुष्यमात्र पर है, क्योंकि सारी विश्व को ही निहाल करना है। ड्रामा प्लैन अनुसार कल्प पहले मिसल सारे विश्व की आत्मायें निहाल हो जाने वाली हैं। बाप सब बच्चों को याद करते हैं, नज़र तो जाती है ना। संगमयुग पर ही बाप बच्चों की सेवा में उपस्थित होते हैं उनकी भेंट में कोई भी सेवा कर न सके। उनकी है बेहद की सेवा। तुम बच्चे भी बाप का शो तब कर सकेंगे जब उन जैसी सेवा करेंगे। सेवा करने वालों को फल भी बहुत भारी मिलता है। बच्चों को नशा भी चढ़ता है कि हम श्रीमत पर सारे विश्व के मनुष्यों को सुख देते हैं।

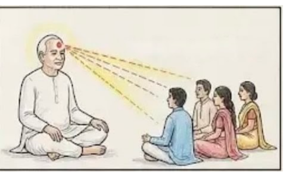

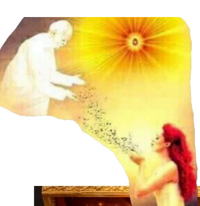

Choice is All yours...

बाप कहते हैं मीठे बच्चे, अब ज्ञान रत्नों से अपनी खूब झोली भरो, जितनी भरनी है भरो। अपना टाइम बरबाद न करो। बाप की याद में टाइम को आबाद करो। जो अच्छी रीति धारणा करते हैं वह

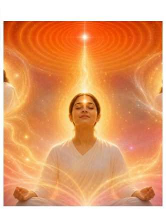

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

08-08-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

फिर औरों की भी अच्छी सर्विस जरूर करेंगे। समय बरबाद नहीं करेंगे। बच्चों को पुरुषार्थ कर अन्तर्मुखी बनना है। अन्तर आत्मा है ना। यह निश्चय करना है कि हम आत्माओं को बाप समझा रहे हैं। सोल-कॉन्सेस हो रहना ही सच्चा-सच्चा अन्तर्मुखी बनना है। अन्तर्मुखी अर्थात् अन्दर जो आत्मा है, उनको सब कुछ बाप से ही सुनना है।

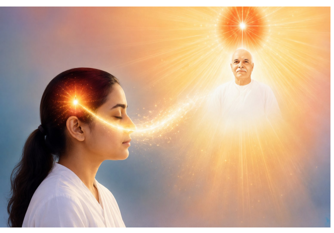

बाप प्यार से बार-बार समझाते हैं। मात-पिता और जो भी अच्छे अनन्य बड़े भाई-बहन हैं, जो अच्छी सर्विस करते हैं उनसे सीखते जाओ। अन्दर में यह निश्चय करो कि हमें फालतू टाइम नहीं गँवाना है।

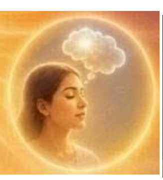

शरीर निर्वाह भी करना है, अपनी रचना को भी देखना है। सिर्फ ममत्व नहीं रखना है। Attention..! ममत्व रखने से नुकसान हो जायेगा। ममत्व एक बाप में रखो। यहाँ तुम बाप के सम्मुख हो। आत्मायें और परमात्मा सम्मुख हैं क्योंकि यहाँ स्वयं बाप आत्माओं को पढ़ाते हैं। वहाँ आत्मायें आत्माओं को पढ़ाती हैं।

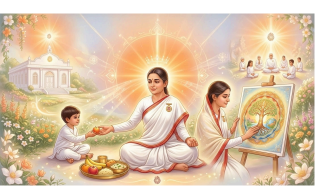

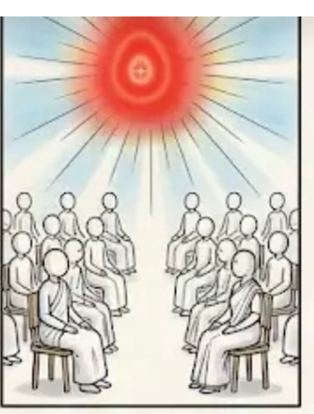

Mind well

08-08-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

यह सब बातें तुम बच्चों के अन्दर मंथन होनी चाहिए। स्टूडेन्ट की बुद्धि में सारा दिन पढ़ाई रहती है ना। तुम्हारी बुद्धि में भी सारी पढ़ाई है। यह है रूहानी पढ़ाई। अच्छे स्टूडेन्ट जो होते हैं वह सदैव एकान्त में जाकर पढ़ते हैं। स्टूडेन्ट आपस में मिलते-जुलते हैं, तो पढ़ाई पर ही वार्तालाप करते हैं। इस बेहद की पढ़ाई में तो और ही खुशी से लग जाना चाहिए।

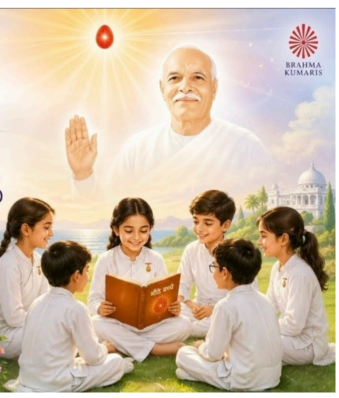

तुम बच्चे अभी बाप के मददगार बनते हो। याद में रहना ही मदद करना है क्योंकि याद की यात्रा माना शान्ति की यात्रा इसलिए कहा जाता है हर एक अपने घर को स्वर्ग बनाओ। हरेक की बुद्धि में अल्फ और बे है। अल्फ को याद करो तो बादशाही मिलेगी। और कुछ करना नहीं है। सिर्फ अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो तो राजाई तुम्हारी। तुम बच्चे - सबको यही पैगाम देते रहो कि बाप को याद करो तो स्वर्ग की राजाई मिलेगी।

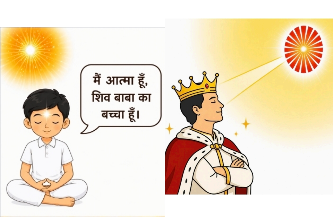

अच्छा!

Points: ज्ञान यो रण M.imp.

08-08-2026 प्रात:

"बापदादा" मधुबन

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का दिल व जान सिक व प्रेम से यादप्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

मेरे मीठे ते मीठे बाबा...

धारणा के लिए मुख्य सार:-

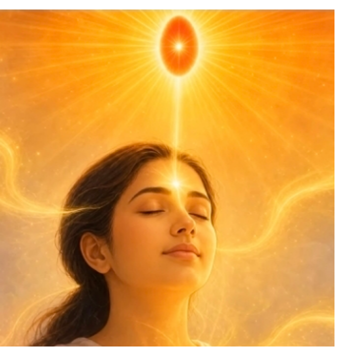

1) बाप की याद में अपना टाइम आबाद करना है। यह अमूल्य समय कहाँ भी बरबाद नहीं करना है। पुरुषार्थ कर अन्तर्मुखी अर्थात् सोल-कॉन्सेस होकर रहना है।

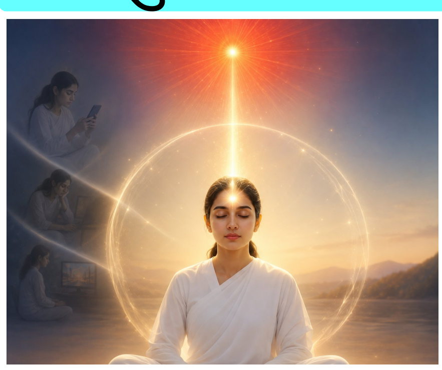

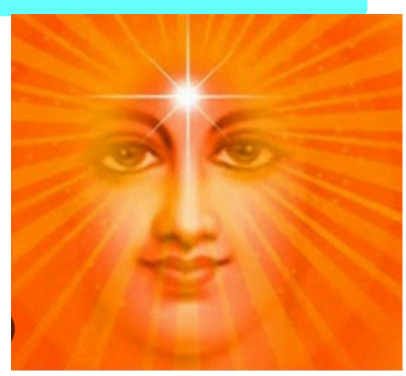

Swamaan

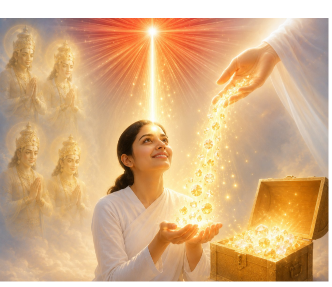

2) अभी हम देवताओं से भी श्रेष्ठ ब्राह्मण हैं, अभी बाप द्वारा अविनाशी ज्ञान रत्नों की लॉटरी मिली है, नॉलेजफुल बने हैं तो चेहरा सदा खुशी से खिला रहे। अन्दर में खुशी की उछलें मारते रहो।

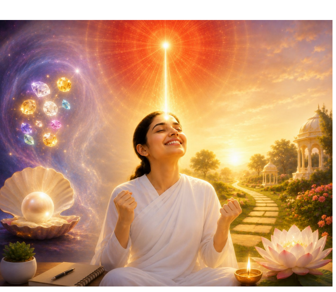

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.

08-08-2026 ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

Method/Process/Instrument

वरदान: मन्सा के महादान द्वारा हर संकल्प की सिद्धि प्राप्त करने वाले मास्टर सर्वशक्तिमान भव

Outcome/Output/Result

Finale Achievement

" I am the master of this universe."
Most Powerful Soul in the Universe

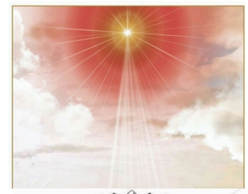

जो बच्चे मन्सा द्वारा शक्तियों का दान करते हैं उन्हें मास्टर सर्वशक्तिमान् का वरदान प्राप्त हो जाता है क्योंकि मन्सा द्वारा शक्तियों का दान करने से संकल्प में इतनी शक्ति जमा हो जाती है जो हर संकल्प की सिद्धि प्राप्त होती है।

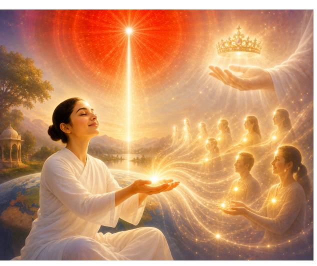

समझा?

Point to be Noted

वे अपने संकल्पों को जहाँ चाहें वहाँ एक सेकण्ड में टिका सकते हैं, संकल्प उनके वश होते हैं।

वे अपने संकल्पों पर विजयी होने के कारण चंचल संकल्प वाले को भी थोड़े समय के लिए अचल वा शान्त बना सकते हैं।

स्लोगन:- निरन्तर एक बाप के संग में रहो तो संगदोष से बच जायेंगे।

Points: ज्ञान योग धा... ...np.

08-08-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

ये अव्यक्त इशारे -

अपवित्रता के बीज को भी समाप्त कर सम्पूर्ण स्वच्छ (पवित्र) बनो

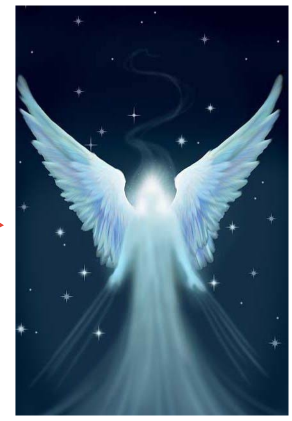

कोई भी विकर्म वा व्यर्थ कर्म अगर बार-बार हो जाते हैं तो इसका कारण है कि सदा साथी को साथ में नहीं रखते हो अथवा साथ का अनुभव नहीं करते हो।

Point for Life time

जैसे शक्तियां एक सेकण्ड की दृष्टि से असुर संघार करती हैं,

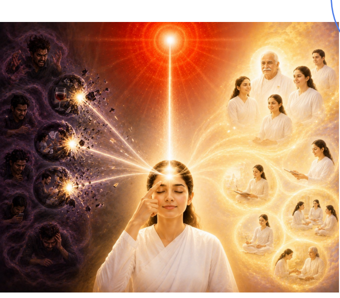

ऐसे कम्बाइण्ड रूप की स्मृति से अपने आसुरी संस्कार वा अपवित्रता के संकल्पों को सेकण्ड में संघार करो।

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

If you wish to stay connected, Here is the link

WhatsApp

TELEGRAM

WORLD WIDE WEB

BKdrluhar

Mind maps are Available on WhatsApp and Telegram Only

अव्यक्त बापदादा:

वरदान का फल निकालने के लिए बार-बार वरदान को स्मृति में लाओ। स्मृति स्वरूप के स्थिति में स्थित रहो।

AV: 30/11/2009
Revise: 12/4/26

All वरदान slogans July 26 → Click

All अव्यक्त इशारे July 26 → Click

All वरदान, slogans and अव्यक्त इशारे At Single place → Click

अव्यक्त बापदादा:

आजकल के जमाने के हिसाब से तो बातें बहुत बदलती जाती हैं। गवर्मेन्ट के कायदे भी बदलने हैं, मनुष्यों की वृत्ति भी बदलनी है। तो हर एक के जीवन में व्यर्थ बातें तो आनी ही हैं, तो व्यर्थ को समाप्त करने के लिए समर्थ संकल्प चाहिए। वेस्ट को खत्म करने के लिए बेस्ट संकल्प चाहिए। तो रोज़ की मुरली में जो वरदान, स्लोगन आता है उसे सुनो। यह वरदान ही श्रेष्ठ संकल्प है। जब व्यर्थ आवे तो श्रेष्ठ संकल्प मन को चाहिए। मन खाली नहीं रह सकता है। मन को कुछ न कुछ संकल्प चाहिए। तो व्यर्थ वेस्ट को बेस्ट करने के लिए आपको यह वरदान और स्लोगन आदि के शब्द मन को चेंज करने के लिए चाहिए।

Remedy

Subtle Psychology

AV: 15/03/2010
Revise: 31/05/2026

अभी बापदादा ने देखा कि बच्चों को माया भी अब तक छोड़ती नहीं है उनका भी प्यार है। और आजकल दो रूपों में विशेष माया भी चांस लेती है। दो रूप में आती है - एक व्यर्थ संकल्प और दूसरा कहीं-कहीं कभी कभी यह भी लहर है जो मैंने किया वा सोचा मैं ही राइट हूँ मैं कम नहीं हूँ। यह लहर फैली हुई है - मैं ही राइट हूँ लेकिन जो कनेक्शन में आते हैं या निमित्त बने हुए हैं वह भी आपके विचार को साथ देते हैं! दूसरों की भी वेरीफिकेशन मिलनी चाहिए।

Attention Please..!

यह व्यर्थ संकल्प टाइम वेस्ट करते हैं। इसलिए बापदादा रोज की मुरली मनन करने के लिए सेवा करने के लिए होमवर्क में रोज देते हैं। अगर मनन करो या मनन करते-करते मगन हो जाओ तो यह रोज का होमवर्क मन को बिजी करने का साधन है।

Example

सुनना और मनन करना या मगन हो जाना यह बापदादा रोज का होमवर्क इसीलिए देता है। जैसे बच्चों को होमवर्क इतना ज्यादा दे देते हैं जो उनकी बुद्धि करने में बिजी रहे। ऐसे रोज की मुरली उसमें चार ही सबजेक्ट का होमवर्क है। मन्सा का भी है वाणी का भी है कर्म का भी अटेन्शन और दिव्यता का इशारा होमवर्क है। तो होमवर्क में बिजी रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प के आने की मार्जिन नहीं रहेगी।

समझा?

इस विधि को अपनाते रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प स्वत: ही आपसे विदाई ले जायेंगे

क्योंकि बापदादा ने देखा याद की यात्रा पर सभी का नम्बरवार अटेन्शन है वाचा सेवा में भी अटेन्शन है। लेकिन अभी अपने संस्कार या दूसरों के संस्कार को परिवर्तन करना यह स्वभाव संस्कार जिसको रॉयल रूप में आप कहते हो नेचर मेरी नेचर है भाव नहीं है नेचर है यह धारणा की सबजेक्ट अभी भी रॉयल रूप में आती रहती है। तो बापदादा आजकल यही इशारा देते हैं कि जो भी धारणाओं में कमी होती है उसको अभी विशेष अटेन्शन दो।

AV: 24/10/2010

Revise: 14/06/2026

अमृतवेला और सूक्ष्म सेवा

11.6 स्वयं और सेवाकेन्द्र को निर्विघ्न तथा पॉवरफुल बनाने का साधन — मनसा सेवा :

(अ) **तीव्र पुरुषार्थी की विशेषता** है ही **एवररेडी** और **आलराउण्डर**। **मनसा** सेवा का चान्स मिले या **वाचा** सेवा का चान्स मिले या **कर्मणा** सेवा का चान्स मिले, लेकिन **हर सब्जेक्ट में नम्बर वन**। ऐसे नहीं वाचा में नम्बर वन, कर्मणा में नम्बर टू और मनसा में नम्बर थ्री। जितना स्नेह से वाचा सेवा करते हो उतना ही मनसा सेवा भी कर सकें। **मनसा सेवा का अभ्यास बढ़ाओ**। वाचा सेवा तो 7 दिन के कोर्स वाले प्रवृत्ति वाले भी कर सकते हैं। आप का कार्य है — वायुमण्डल को पॉवरफुल बनाना। अपने स्थान का, शहर का, भारत का व विश्व का वायुमण्डल पॉवरफुल बनाओ। चेक करो मनसा सेवा में सफलता मिलती है? अगर **मनसा सेवा में सफलता होगी, तो सदा स्वयं और सेवाकेन्द्र निर्विघ्न और चढ़ती कला में होगा। चढ़ती कला यह नहीं कि संख्या वृद्धि को पाये। चढ़ती कला संख्या में भी, क्वालिटी में भी और वायुमण्डल में भी तथा स्वयं**

समझा?

Point to be Noted

Definition of

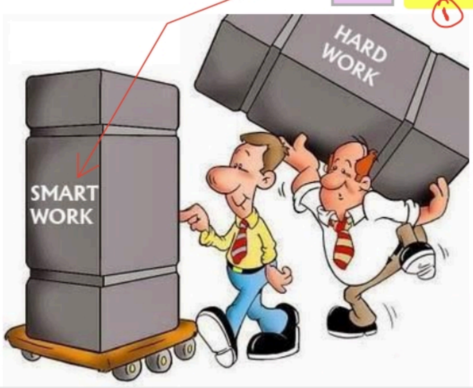

m.m.m....imp. to understand

चढ़ती कला
संख्या quality वायुमण्डल स्वयं साथी

साथियों में भी चढ़ती कला। इसको कहा जाता है 'चढ़ती कला'। तो ऐसे अनुभव करते हो? अमृतवेला स्वयं का पॉवरफुल है? ऐसे तो नहीं अमृतवेले में अलबेलापन विघ्न बनता हो? ऐसा पॉवरफुल अमृतवेला है जो विश्व को लाइट और माइट का वरदान दो? अमृतवेले की याद से आप अपने-आप से सन्तुष्ट हो?

पुछो अपने आप से...

एक - संकल्प शक्ति जो सबसे श्रेष्ठ शक्ति है उसको यथार्थ रीति स्वयं प्रति वा सेवा प्रति समय प्रमाण कार्य में लगाने की यथार्थ रीति नहीं है। दूसरा कारण - वाणी की शक्ति को यथार्थ रीति, समर्थ रीति से कार्य में लगाने की कमी। इन दोनों में कमी का कारण है - यूज के बजाय लूज़। शब्दों में अंतर थोड़ा है लेकिन परिणाम में बहुत अंतर पड़ जाता है। बापदादा ने सिर्फ 3-4 दिन की रिजल्ट देखी, टोटल रिजल्ट नहीं देखी। हर एक की 3-4 दिन की रिजल्ट में क्या देखा? 50 परसेन्ट अर्थात् आधा-आधा। संकल्प और बोल में दोनों शक्तियों के जमा का खाता, 50 परसेन्ट आत्माओं का 40 परसेन्ट और व्यर्थ वा साधारण का खाता

Subtle Psychology

60 परसेन्ट देखा। तो सोचो जमा कितना हुआ! ज्यादा वजन किसका हुआ? इसमें भी वाचा के कारण मन्सा पर प्रभाव पड़ता है। मन्सा, वाचा को भी अपनी तरफ खींचती है। आज बापदादा वाणी अर्थात् बोल की तरफ विशेष अटेन्शन दिला रहे हैं क्योंकि बोल का सम्बन्ध अपने साथ भी है और सर्व के साथ भी है। और देखा क्या? मन्सा द्वारा याद में रहना है - उसके लिए फिर भी बीच-बीच में प्रोग्राम रखते हैं। लेकिन बोल के लिए अलबेलापन ज्यादा है, इसलिए बापदादा इस पर विशेष अंडरलाइन करा रहे हैं। दो वर्ष पहले बापदादा ने विशेष पुरुषार्थ में सेवा में आगे बढ़ने वाले महारथी आत्माओं को और सभी को तीन बातें बोल के लिए कही थी - "कम बोलो, धीरे बोलो और मधुर बोलो।" व्यर्थ बोलने की निशानी है - वह ज्यादा बोलेगा, मजबूरी से समय प्रमाण, संगठन प्रमाण अपने को कंट्रोल करेगा लेकिन अंदर ऐसा महसूस करेगा जैसे कोई ने शान्ति में चुप रहने लिए बांधा है। व्यर्थ बोल बड़े-ते-बड़ा नुकसान क्या करता है? एक तो शारीरिक एनर्जी समाप्त होती क्योंकि खर्च होता है और दूसरा - समय व्यर्थ जाता है। व्यर्थ बोलने वाले की आदत क्या होगी? छोटी-सी बात को बहुत लम्बा-चौड़ा करेगा और बात करने का तरीका कथा मुआफिक होगा। जैसे रामायण, महाभारत की कथा... इंट्रेस्ट से सुनाते हैं ना। खुद भी रुचि से बोलेगा, दूसरे की भी रुचि पैदा कर लेगा, लेकिन रिजल्ट क्या होती? रामायण, महाभारत की रिजल्ट क्या है? राम बनवास गया, कौरवों और पाण्डवों की युद्ध हुई, कहानी जैसा दिखाते हैं, सार कुछ भी नहीं लेकिन साज़ बहुत रमणीक होता है। इसको कहते हैं कथा। व्यर्थ बोलने वाले माया के प्रभाव के कारण वह कमजोर आत्मा है, उन्हों को सुनने और सुनाने के साथी बहुत जल्दी बनते हैं। ऐसी आत्मा एकान्तप्रिय हो नहीं सकती इसलिए वह साथी बनाने में बहुत होशियार होगा। बाहर से कभी-कभी ऐसे दिखाई देता है कि इन्हों का संगठन पावरफुल और ज्यादा लगता है। लेकिन एक बात सदा के लिए याद रखो कि माया के जाने का

ALERT

अन्तिम चरण है, इसलिए विदाई लेते-लेते भी अपना तीर लगाती रहती है इसलिए कभी-कभी, कहाँ-कहाँ माया का प्रभाव अपना काम कर लेता है। वह आराम से जाने वाली नहीं है। लास्ट घड़ी तक डॉयरेक्ट नहीं तो इनडायरेक्ट, कडुवा रूप नहीं तो बहुत मीठा रूप और नया-नया रूप धारण कर ब्राह्मणों की ट्रायल करती रहती है। फिर भोले-भाले ब्राह्मण क्या कहते? यह तो बापदादा ने सुनाया ही नहीं था कि इस रूप में भी माया आती है! अलबेलेपन के कारण अपने को चेक भी नहीं करते और सोचते कि बापदादा तो कहते हैं कि माया आयेगी..। आधा अक्षर याद रखते हैं कि माया आयेगी लेकिन मायाजीत बनना है - यह भूल जाते हैं।

Remember it...!

Check & Change

और बात - व्यर्थ वा साधारण बोल के भिन्न-भिन्न रूप देखे। एक - सीमा से बाहर अर्थात् लिमिट से परे हंसी-मजाक, दूसरा - टोंटिंग वे, तीसरा - इधर-उधर के समाचार इकट्ठा कर सुनना और सुनाना, चौथा - कुछ सेवा-समाचार और सेवा समाचार के साथ सेवाधारियों की कमजोरी का चिंतन - यह मिक्स चटनी और पांचवा - अयुक्तियुक्त बोल, जो ब्राह्मणों की डिक्शनरी में है ही नहीं। यह पांच रूपरेखायें देखी। इन पांचों को ही बापदादा व्यर्थ बोल में गिनती करते हैं। ऐसा नहीं समझो - हंसी-मज़ाक अच्छी चीज़ है। हंसी-मज़ाक अच्छा वह है जिसमें रूहानियत हो और जिससे हंसी-मजाक करते हो उस आत्मा को फायदा हुआ, टाइम पास हुआ या टाइम वेस्ट गया? रमणीकता का गुण अच्छा माना जाता है लेकिन व्यक्ति, समय, संगठन, स्थान, वायुमण्डल के प्रमाण रमणीकता अच्छी लगती है। अगर इन सब बातों में से एक बात भी ठीक नहीं तो रमणीकता भी व्यर्थ की लाइन में गिनी जायेगी और सर्टीफिकेट क्या मिलेगा कि हंसाते बहुत अच्छा है लेकिन बोलते बहुत है। तो मिक्स चटनी हो गई ना। तो समय की सीमा रखो। इसको

Point to Ponder & Inculcate..

कहा जाता है मर्यादा पुरुषोत्तम। कहते हैं - मेरा स्वभाव ही ऐसा है। यह कौन सा स्वभाव है? बापदादा वाला स्वभाव है? तो इसको भी मर्यादा पुरुषोत्तम नहीं कहेंगे, साधारण पुरुष कहेंगे। बोल सदैव ऐसे हों जो सुनने वाले चात्रक हों कि यह कुछ बोले और हम सुनें - इसको कहा जाता है अनमोल महावाक्य। महावाक्य ज्यादा नहीं होते। जब चाहे तब बोलता रहे - इसको महावाक्य नहीं कहेंगे। तो सतगुरू के बच्चे - मास्टर सतगुरू के महावाक्य होते हैं वाक्य नहीं। व्यर्थ बोलने वाला अपनी बुद्धि में व्यर्थ बातें, व्यर्थ समाचार, चारों ओर का कूड़ा-किचड़ा जरूर इकट्ठा करेगा क्योंकि उनको कथा का रमणीक रूप देना पड़ेगा। जैसे शास्त्रवादियों की बुद्धि है ना इसलिए जिस समय और जिस स्थान पर जो बोल आवश्यक हैं, युक्तियुक्त हैं, स्वयं के और दूसरी आत्माओं के लाभ-लायक हैं, वही बोल बोलो। बोल के ऊपर अटेन्शन कम है, इसलिए इस पर डबल अण्डरलाइन।

Point for Lifetime — Point of the Day

विशेष इस वर्ष बोल के ऊपर अटेन्शन रखो। चेक करो - बोल द्वारा एनर्जी और समय कितना जमा किया और कितना व्यर्थ गया? जब इसको चेक करेंगे तो स्वत: ही अन्तर्मुखता के रस को अनुभव कर सकेंगे। अंतर्मुखता का रस और बोल-चाल का रस - इसमें रात-दिन का अन्तर है। अन्तर्मुखी सदा भृकुटी की कुटिया में तपस्वीमूर्त का अनुभव करता है। समझा!

Most imp

समझना अर्थात् बनना। जब कोई बात समझ में आ जाती है तो वह करेगा जरूर, समझेगा जरूर। टीचर्स तो हैं ही समझदार, तब तो भाग्य मिला है ना। निमित्त बनने का भाग्य - इसका महत्व अभी कभी-कभी साधारण लगता है, लेकिन यह भाग्य समय पर अति श्रेष्ठ अनुभव करेंगे। किसने निमित्त बनाया, किसने मुझ आत्मा को इस योग्य चुना -

Ask within...!